Chapter- 4

चतुर्थ - अध्याय

शिवानी के कहानी साहित्य में वस्तु और शिल्प :

वस्तु योजना :- शिवानी की कहानियाँ मार्मिक और हृदय को छू लेने वाली हैं । इनकी कथावस्तु की जीवन्तता आँखों देखे और भोगे सत्य के निकट ले जाकर पाठक को झकझोरे बिना नहीं रहती । इनकी कथाएँ यथार्थता की धरातल पर स्थित है इसलिए वे स्वयं कहती है, "जब भी कहानियाँ लिखने बैठती हूँ, स्मृतियों के जल प्रपात पर यत्न से धरी गरीय सी शिला कोई अदृश्य शक्ति उठाकर दूर पटक देती है, और वह तीव्र फुहार मेरे कागज-पत्र, मेरी लेखनी और स्वयं मुझे आपाद मस्तक सराबोर कर छोड जाती है ।"[1]

इनकी अधिकतर रचनाएँ कुमाऊँ अँचल से अंकित है तथा वस्तु पारिवारिक, सामाजिक और वैवाहिक समस्याओं पर आधारित है । शिवानी की अधिकतर रचनाएँ नारी प्रधान है इनकी पैनी दृष्टि से जीवन का कोई भी पहलू अछूता नहीं रहा है ।

बौद्धिक व मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से सर्वाधिक प्रभाव के कारण स्वातंत्र्योत्तर कहानियों का कथानक ह्रासोन्मुख होता गया है । असंगत कथा सूत्रों वाली कहानियों से भाव सम्प्रेषण के लिए सांकेतिक व प्रतीकात्मक

1 - "मेरी प्रिय कहानियाँ की भूमिका" - शिवानी - पृ॰6

कहानियों के रूप में दृष्टव्य है कुछ उदाहरण यथा - शिवानीजी की "तोप", "सती", मोहन राकेश की जख्म, नरेश मेहता की निशानी, मनु भंडारी की अभिनेता धर्मवीर भारती की सावित्री नं. दो आदि उल्लेखनीय है ।

स्वयं सिद्धा भी एक आत्मरूढ़, स्वाभिमानी नारी की मर्म-स्पर्शी कहानी है । जीवन में कभी न हार मानने वाली माधवी शादी के दूसरे दिन ही मायके लौट आयी थी और पति की मृत्यु तक वह अपना पराजय स्वीकार नहीं करती है और स्वाभिमान से जीवन बिताती है ।

"अपराजिता" के अंतर्गत भी नारी अपनी जीद के सहारे मन चाही चीज़ प्राप्त कर सकती है यह स्पष्ट है । पति के वैरागी होने पर भी उसे वापस घर लाने में असफल होती है तो रात को तीन बजे बाद भी शहर से दूर भयंकर वन स्थली में जाकर एक नाटकीय ढंग से दिशा जंगल जाते पति का अपहरण कर खींचकर कार में बिठाकर वापस ले आकर अपना विजय स्थापित करती है ।

"निर्वाण" के अंतर्गत धर्म के नाम पर ढोंग करने वाले साधुओं का पर्दाफाश किया गया है । कितनी तस्करी, भोली भाली शिक्षित युवतियों के सम्मोहन - पाश आदि प्रवृत्तियों को धर्म गुरु के अंचल के अंतर्गत करते गुरु की कथा चित्रित है ।

इसके लिये दोषित कौन ? समाज, व्यक्ति या वह पाखण्डी ? इस समस्या पर प्रश्नार्थ आज भी लगा हुआ है ।

पति और पड़ोशिन पर रखा गया विश्वास भोलेपन नहीं बल्कि मूर्खता है यह "सौत" में प्रतिबिम्बित है । इस प्रकार "भीलनी" में सौन्दर्य किसे नहीं पगला सकता ? यह चित्रित है । इसके अतिरिक्त अपनी बहिन जो दोषित है यद्यपि इसके लिये अपनी जान गँवा कर क्षमा देना हिन्दु-नारी की विशिष्टता इस कहानी में दृष्टिगत है । रूपवती छोटी बहन अपने पति के साथ रंगे हाथ पकड़ी जाने पर पति की हत्या करके अपने आप की भी आहुति देकर कोई अपरिचित भीलनी का नाम देकर बहिन को क्षमादान देती बड़ी बहन की कथा है ।

शिवानी की कथाएँ अधिकतर नारी प्रधान हैं । इनकी श्रेष्ठ कहानी "करिए छिमा" है । जिसमें प्रेम के लिये तड़पती एक नारी की कहानी है । जो अनपढ़ होते हुए भी मृत्यु-पर्यन्त पति के लिये तड़पती है प्रेमी की कामेच्छा संतुष्ट कर उन पर कलंक न लगे इस हेतु से इसका परिणाम खुद भुगतती है । अपने पुत्र की हत्या करके स्वयं कटघरे में खड़ी हो जाती है किंतु प्रेमी से कुछ फरियाद नहीं करती है ऐसी निःस्वार्थ प्रेम प्रकट करती नारी की व्यथा-कथा है ।

किन्तु पुरुष प्रेम की कीमत नहीं समझता है । "चलोगी चन्द्रिका" के अंतर्गत प्रेमिका चन्द्रिका के लिये · प्रेमी ढलती उम्र में चन्द्रिका को देखकर लौट जाता है । क्या वह उसके शरीर से ही प्यार करता था ? इस मोड़ पर समाप्त हुई यह मार्मिक व्यंग्यार्थ कहानी है ।

शिवानी ने एक ओर प्रेम के लिए तड़पती तथा पति या प्रेमी के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाली नायिकाओं की कथाएं प्रस्तुत की है तो दूसरी ओर इसके विपरित चरित्रों की भी नायिकाओं का वर्णन है ।

"के" कहानी के अंतर्गत दास्य पति पर शंकित होकर निर्दोष किशोरी को जहरीली कुल्फी खिलाकर हत्या करने वाली डाक्टरनी की कथा है । धन वैभव के बल पर अपने से कम उम्र वाले शेखर से ब्याह कर सेवा करवाती है । वैष्णव संतनियों के साथ रहती किशोरी पर शंकित होकर हत्या करती है और सुन्दरता पर व्यंग्य करती है वास्तव में सुन्दरता क्या है ? क्या वह जानती है ? "लोप" कहानी में भी अनेक पुरुषों द्वारा ढलती उम्र में भी अपनी काम-वासना संतुष्ट करती स्त्री की कथा है । तो "सती" के द्वारा लोगों को ठगती एक विशिष्ट प्रकार की ठगिनी की कहानी है ।

इस प्रकार "मेरी प्रिय कहानियाँ", "रथ्या", "कैंजा", "माणिक", "गैंडा", "स्वयंसिद्धा", "पुतोंवाली," आदि कहानी संग्रहों से करीब 30 कहानियाँ उपलब्ध हैं । जो हमें मनोरंजन भी देती हैं तथा हमारे सामने कई समस्याएँ भी उद्धृत करती है । कहानियां छोटी होती हुए भी जिनकी कथावस्तु हमें अंत तक पकडकर रखती है ।

कथानक की विशेषता :- शिवानी की कहानियाँ अपने आप में विशिष्टता रखती हैं । उन्होंने आधुनिक जातीय परिवर्तन, नि:संतान, अवैध संतान, नारी समस्या आदि समस्याओं पर लिखा है । स्त्री सब कुछ सह लेती है किंतु अपनी सौत को नहीं सह सकती है । चाहे वास्तविक हो या शंका हो किंतु यह उसे असह्य है और उसको अपने रास्ते से दूर करके ही रहती है । "सौत", "के", आदि अनेक कहानियां में यह समस्या चित्रित है । "भूल", "मामाजी" "मौसी" आदि उनकी मौलिक रचनाएँ हैं । वे स्वयं भी कहती है, कि "सोचती हूँ, क्या इसे अपनी मौलिक कहानी कह सकती हूँ ? पूरा कथानक ही तो विधाता का है, किन्तु कहने में क्या दोष है । अब तो कहानी के नायक ने काल चक्र की यवनिका के अंतराल में अपने जीवन के रंगमंच पर किसी कुशल अभिनेता की कार्य पटुता से दूसरा ही अभिनय आरम्भ कर दिया है और नायिका एक रहस्यमयी कन्दरा में सदा के लिये सो गई है । फिर भी कैसा विचित्र संयोग है कि मैं एक ही माह की छोटी-सी अवधि में तीनों

पात्रों से एक-एक कर फिर टकराती चली गई हूँ ।"[1]

इनके कथानक संवेदनशील, सूक्ष्म चित्रण प्रधान है । कई कथानक कुमाऊँ अंचल के भी हैं ।

इनकी वस्तु योजना में पुनरावृत्ति एवम् घटना- वैचित्र्य भी देखने मिलता है । स्वयंसिद्धा, अपराजिता, निर्वाण आदि कहानियाँ उदाहरणार्थ है । "भीलनी" में जो कई साल से संयमित जीवन व्यतित करता नायक का अचानक साली से शरीर सुख प्राप्त करना और बिजली का चले आना आदि घटना की विचित्रता है ।

"स्वयंसिद्धा" के अंतर्गत भी माधवी, कौस्तुभ और उसकी पत्नी का अचानक ट्रेन को धक्का लगना, बिजली का चले जाना और अचानक माधवी और कौस्तुभ का बाहुपाश होकर चुम्बन लेना ये घटनाएँ विचित्र-सी लगती है । फिर एक बात और है कि सुबह हो गई है, बिस्तर बाँध रहे हैं, इतने उजाले में बिजली चले जाने से क्या हो सकता है ? ऐसे में बाँहों के घेरे में कसकर बांधना और अधरों का स्पर्श क्या संभव है ? फिर भी इनकी घटनाओं की रोचकता और विशिष्ट शैली से सामान्य त्रुटियों की प्रति आकृष्ट करना निष्प्रयोजन है ।

1 - "अनाथ" - शिवानी - पृ० 115

इसके कई कथानक यथार्थ पर और मनोवैज्ञानिकता पर अवलंबित हैं । कथानकों की विशेष चर्चा द्वितीय अध्याय के अंतर्गत भी दृष्टव्य है अतएव अब हम इनके चरित्र चित्रण कला की ओर अभिमुख होंगे ।

"करिए छिमा" में हीरावती को अपनी संतान की हत्या करके पगली क्यों कहलवाना पड़ा ? "भिक्षुणी" की नायिका कीकी को भिक्षुणी क्यों बनना पड़ा ? तथा "मामाजी" कहानी के अंतर्गत अपने सगे जुड़वा भाई को अपाहिज नग्न पागलवस्था में तथा भैयादूज जैसे त्यौहार पर भी क्यों त्याग करना पड़ा ? ..... और "मौसी" कहानी के अंतर्गत भी तिला को अपनी अच्छी भली संतान का त्याग करके मातृत्वहीन क्यों होना पड़ा ? इन सभी समस्याओं के लिये जिम्मेदार कौन है ? लेखिका ने अपनी यथार्थ व मौलिक कृतियों से समाज के सामने यही प्रश्नार्थ किया है । कुष्ठरोग की समस्या . भी यहाँ पर प्रस्तुत किया गया है ।

चरित्र - चित्रण कला :- पात्रों के चरित्र चित्रण में भी अनेक प्रकार की नवीन प्रणालियाँ दृष्टिगत होती है । आज की कहानियों में मानसिक द्वन्द्व एवं आत्म विश्लेषण परक स्थितियों की जटीलता को लेकर पात्रों के मानसिक व्यापारों की अति नग्न यथार्थ अभिव्यक्ति की गई है । चरित्र अब रचनाकार की भाव या विचार बोध की अभिव्यक्ति नहीं

रहा है किंतु आधुनिक संवेदनाओं का माध्यम बनता जा रहा है । आज पात्रों द्वारा मनोवैज्ञानिक स्तर पर वर्तमान कालीन मानव के भीतरी द्वन्द्वों को उजागर किया गया है । शिवप्रसाद की कहानी कर्मनाशा की हार के भैरो पाडें, शिवानीजी की करिए छिमा की हीरावती, राजेन्द्र यादव की दीपक की दावत में माँ आदि कहानियों के पात्र इसी प्रकार के हैं । नायक हीन शैली के नवीन प्रयोग के आधार पर भी ऐसी कहानियों की रचना की गई है । जिसमें कोई एक पात्र उसका नायक न होकर सारा समाज ही नायक होता है । शेर न हो तो ऐसा हो तथा दिल्ली में एक मौत (कमलेश्वर का नई कहानियाँ 1962) आदि ऐसी ही कहानियाँ है ।

सामान्यतः शिवानीजी की सभी कहानियाँ नारी चरित्र प्रधान हैं । उनके सभी चरित्र अभिजात्य होते हुए कभी मध्यमा या निम्नस्तरीयता धारण करते हैं तो दूसरी और निम्नस्तरीयता से अभिजात्य भी धारण करते हैं संक्षेप में उनके चरित्र स्थिर नहीं है गतिमान हैं । यथा - "करिए छिमा" का नायक श्रीधर अभिजात्य होते हुए भी अपना विवेक, संस्कार, निष्ठा सब कुछ भूलकर बदनाम हीरावती के साथ छः दिन तक गुफा में अपनी वासना संतुष्ट करता रहा, और फिर इसे भूल अपना मंत्री जीवन शुरू कर दिया ।

इस प्रकार "पुष्पहार" की नायिका दुर्गी मध्यमा प्रेमी थी किंतु उसे अपना प्रेमी न मिलने पर निम्नस्तरीयता धारण करना पड़ा । यही घटना "ज्येष्ठा" के अंतर्गत पिरी के चरित्र से स्पष्ट होता है वह भी अपनी इच्छा प्राप्ति के लिये वेश्या के गले का मुंगा कालदान से अदृश्य कर गई थी ।

शिवानी ने जीवन की साधारण घटनाओं को अपनी रचना के विषय बनाये हैं अतः इनके सभी पात्र यथार्थ हैं । शिवानी ने उन्हीं लागों को अपनी कहानियों के पात्र बनायें हैं जिनसे वे परिचित थीं या जिनके सम्पर्क में आई थी । कई पात्र कुमाऊँ परिवेश से भी लिये गये हैं, क्योंकि वह उनकी प्रिय भूमि है । उनके चरित्र चित्रण कला की सफलता सभी चरित्रों में है । चाहे वे अभिजात्य हो, मध्यम स्तरीय हो या निम्न स्तरीय । इनकी सभी कहानियों में नारी पात्रों को ही उभारा है चूंकि वे एक सफल बहुज्ञ और अनुभव - सम्पन्न लेखिका है ।

शिवानी के पात्र यथार्थ और आदर्शवाद पर चलते हुए भी है । "करिए छिमा" की हीरावती स्वयं बदनाम होते हुए भी उसके आदर्श ऊँचे हैं वह अपने प्रेमी को कलंकित देखना नहीं चाहती थी अतएव अपने शिशु की हत्या करके कटघरे में हाकिम के पूछने पर बोली, "सरकार आप तो दिन-रात पहाड़ों को दौरा करते हैं । कई झरनों का पानी पीते

होगे । कभी आपको जुकाम भी हो जाता होगा । क्या आप बता सकते हैं कि किस झरने के पानी से आपको जुकाम हुआ है ? " ।

इनके पात्रों पर परिस्थितियों का प्रभाव पड़ा है । मानव चरित्र के निर्माण में उसकी परिस्थितियों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है । परिस्थितियाँ कदम कदम पर पात्र को प्रभावित करती है । मनुष्य परिस्थितियों से बदलता ही नहीं कभी कभी वह परिस्थितियों को भी बदल देता है और कभी कभी वह स्वयं भी बदल जाता है । "अपराजिता" के अंतर्गत आरती अपने वैरागी बने पति को रास्ते से खींचकर कार में बिठाकर वापस ले आती है । "स्वयं सिद्धा" में भी नायिका माधवी जिस परिस्थितियों से गुजरती है और जो आदर्श से जिस इच्छा को प्राप्त करना चाहती है वह नहीं मिलने पर वह स्वयं भी बदल जाती है । इस प्रकार परिस्थितियों से ही प्रभावित होकर "मौसी" के अंतर्गत तिला अपनी संतान का आदर्श त्याग करके बहिन की शापित संतान को अपनाकर संतान-हीन बनती है । यहाँ एक उच्च आदर्श का भी प्रदर्शन है । इस प्रकार शिवानी के कई पात्र नियति-ग्रस्त हैं । उन्हें प्रकृति से ऐसा ही भाग्य मिला है ।

कहानी में उपन्यास की तरह विशाल फलक न होने पर भी शिवानी ने अपनी लेखनी का परिचय दिया है और अपने पात्रों

1 - "करिए छिमा" - शिवानी - पृ॰ 34

को सजीव बनाया है । नियति के कारण ही तो हीरावती को कोढ़ी साहब की औडियार में बदनाम होकर रहना पडा तथा जीवन पर्यन्त अपने प्रेमी से बिछुडना पड़ा । "अनाथ" की सौन्दर्यवान नायिका एनी को भी नैनीताल के जंगलों में भटकना पडा तथा अपने बच्चे को अनाथालय में दे देना पडा । अपने सगे जूडवा भाई को भैयादूज के अवसर पर भी "मामाजी" की नायिका रोहिणी नहीं बुला पायी थी तथा दरबान द्वारा भगाया जाने लगा ये सब क्या है ? सिर्फ नियति-चक्र ।

निष्कर्षत : शिवानी के सभी पात्र उच्चवर्गीय हैं । उनकी चरित्र चित्रण कला बेजोड हैं । नारी जीवन की अभिव्यंजना उनके चरित्रों के द्वारा प्रदर्शित हुई है । यह माना कि चरित्र नियति के हाथों का खिलौना है अपितु सशक्त नारी चरित्रों से शिवानी यह बतलाना चाहा है कि नारी मनुष्य के हाथ का खिलौना नहीं है । वह भी पुरुषों की बराबरी कर सकती है । यथार्थ और आदर्शवाद की सीमा में रहकर नारी के जीवन के विविध परिदृश्यों का चित्रण अंकन करने में शिवानी अधिक सफल रही है । "जोकर" की नायिका बुलबुल का मातृप्रेम का चित्रण अजोड है । अपने विकलांग पुत्र अभिमन्यु के के लिए वह शहरों के कोने कोने छान मारती है और तड़पती रहती है । "प्रतिशोध" की सौदामिनी अपने पति शंकर से कैसा प्रतिशोध लेकर अपनी नारी-शक्ति का परिचय

देती है । आदि चरित्र शिवानी के जीवन्त चरित्र है जो पाठक के मान्सपट पर चीर-अंकित रहते हैं ।

कथोपकथन :- विभिन्न विद्वानों के मतों के अनुसार कथोपकथन के महत्व को प्रतिपादित करते हुए हम यह कह सकते हैं कि कथोपकथन आवश्यक है व संक्षिप्त, सजीव और सार गर्भित होने चाहिए इतना ही नहीं अपितु कथोपकथन पात्र एवं परिस्थितियों के अनुकूल होने चाहिए । उपन्यास की तरह शिवानी ने अपनी कहानियों के अंतर्गत भी कहीं कहीं स्थान पर लम्बे कथोपकथन का प्रयोग किया है जैसे "भिलनी" में लेखिका की सहेली डोक्टरनी विलास अपने अतीत की कहानी सुनाती है जिसमें कई जगह पर एक ही संवाद पूरे पृष्ठ तक चलता है । 54, 57 । "स्वयं सिद्धा" के पृष्ठ - 24 पर एवम् "तर्पण" के अंतर्गत भी पृष्ठ - 61 पर ऐसे ही लम्बे कथोपथन दृष्टिगत होते हैं । फिर भी शिवानी की रोचक शैली के कारण पाठक को इसका अहसास नहीं होता एवम् अखरता नहीं है । अपनी कहानियों में शिवानी ने चुस्त, छोटे - छोटे एवम् वातावरण के अनुकूल कथोपकथन भी किये हैं । कथोपकथन कथा - प्रगति में भी सहायक होते हैं । शिवानी की रचनाओं में यह विशेषता उपलब्ध है । उन्होंने कथा विकास में वार्ता से सहायता

अवश्य ली है पर चरित्र चित्रण की अपेक्षा कम । कथोपकथन द्वारा चरित्र चित्रण में अधिक सहायता मिलती है । शिवानी ने कथोपकथन की भाषा में औचित्य विचार का अतिक्रमण नहीं किया है। इनके कथोपकथन पात्र व वातावरण के अनुकूल हैं । इसका उदाहरण कुमाऊं की बुढ़िया से ही स्पष्ट होता है । यथा - "अरे हरामियों, इनाम बाटेंगी तुम्हारी मां-बहनें, उन्हीं को न्योतना तुम अपनी अम्मा के भतारों ।....... अरे उस हरामजादे ने शादी कर ली तो क्या दोष मेरा है ? अरे अम्मा के खसमों, जमाना ऐसा आ रहा है कि तुम्हारी बहू बेटियां भी डोम - मुसल्लों के साथ भागेंगी । वह दिन भी दूर नहीं है खबीसों, जब प्राण रहने पर भी मुरदे बन गए तुम्हारे बेटों की लाशों पर तुम्हारी घरवालियां पछाड खा-खाकर रोएंगी; जब हेनरी साहब की बूढी मेम की तरह तुम्हारे वही बेटे तुम्हें किसी अनाथाश्रम में पहुँचा आएंगे ।"[1]

शिवानी धीर-गंभीर लेखिका होते हुए भी कई जगह पर उनके पात्र हास्योक्ति किये बिना नहीं रहते । "तोप" कहानी में तोप नामकरण ही उस स्त्री की शरीर - परिधि से ही रखा गया है । उसके सैनेटोरियम का मरीज लाये हुए सेब का भाव पूछने लगा तब वह कहती है "नो मिजेट, तुमको भाव से क्या ? चुपचाप खाओ । कह कर उसे सिडक दिया तो

1 -"तपण" - शिवानी - पृ. 61

वह खिलौने के क्यूपिड की मुद्रा में दोनों हाथ गाल पर धरकर रुआंसा हो गया । कहने लगा "बनिया है ना मम्मी, कल बकरी से भी दूध का भाव पूछ रहा था ।" सरकार की रसिकता पर तोप हंसती - हंसती पूरा दिवान हिला उठी ।"[1]

इस प्रकार शिवानी ने "स्वयं सिद्धा" के अंतर्गत भी कौस्तुभ की मोटी पत्नी द्वारा कई उद्धरण प्रस्तुत किय हैं । जैसे - "कितने साल की होंगी बहनजी आप ? चमकती पुतलियों में किसी दूध मुंही बालिका सी भोली जिज्ञासा तैर रही थी । "बुद्धिमती स्त्री कभी दूसरी स्त्री की उम्र नहीं पूछती ।" माधवी ने हंसकर उत्तर दिया ।

"जानती हूं - जानती हूं पर इसलिये पूछ रही थी कि मैं बारह की हुई तो बीस की लगने लगी थी और अब पैंतीस की हूं तो पचास की लगने लगी हूं । क्यों है ना ? मेरे मायके में सब की बाढ ही ऐसी है । कई बार सोचती हूं डाइटिंग करुंगी, पर अब डाइटिंग का क्या होगा । जब जवानी में ही नहीं कर पाई, तो बुढापा क्यों बिगाड़ूं ।"[2]
भीलनी के अंतर्गत भी एक ऐसा ही परिहास देखिए ।
"तब सुना विलास, इस बार हम पसन्द नहीं किये गये तो हम खुद ही यह सर्कस बन्द कर देंगे । तू क्या सोचती है, मुझे ये बार-बार मनहूस चेहरे पर रंगी बुन्दकियाँ रख

1 - "तोप" शिवानी - पृ• 116
2 - "स्वयं सिद्धा" - शिवानी - पृ• 24

कर जोकर बनना अच्छा लगाता है ? नहीं पसन्द किया तो हम डोक्टरी पढेंगी - अंगूठा दिखा देंगे इन मुए मरदों को।"[1] शिवानी ने उपन्यास की तरह कहानियों के कथोपकथन में भी अपने अभिजात्य चरित्रों के द्वारा अंग्रेजी कथोपकथन भी प्रयोग में लिये हैं । जैसे - भीलनी के अंतर्गत दिद्दा कहती है, "मारना चाहा था भीलनी सौत को, पर निशाना चूक गया अंकल । I was always poor shot. मैं पक्की निशाने बाज कभी नहीं रही ।"[2]

"निर्वाण" के अंतर्गत भी लेखिका के पूछने पर चोपडा साहब कहते हैं - "मन्नू ? शी हैज गोन, गोन विद द विंड,..."[3] इस प्रकार "तोप" के अंतर्गत भी अंग्रेजी कथोपकथन प्रयुक्त हैं ।

शिवानी के कथोपकथन कई जगह पर बडे कलात्मक ढंग से प्रस्तुत हुए हैं । कथोपकथन से ही वातावरण सर्जित हो जाता है । जैसे - दिद्दा की शादी पर चित्रित चित्रांकन देखिए । "लाइए जनाब, पहले साली का नेग तो निकालिए ।" मैंने उन्हें बांह पकडकर पीछे खींच लिया । अलस, निढाल पडी दिद्दा के मुरझाए चेहरे पर भी पल-भर को हंसी थिरक गई ।

"बोलो, बोलो, क्या लोगी ? जीजा ने बडे उत्साह से जेब का बटुआ निकाल दिया ।

1 - "भीलनी" पृ. 54
2 - "भीलनी" पृ. 68
3 - "निर्वाण" पृ. 70

"उंह ! " मैं भी बच्ची की सी जिद में अड़ गई – रुपया नहीं लेंगे जी ......"

"तब ?"

"तब क्या, दिद्दा की सी अंगूठी दिलवाइए हमें, समझे ? "ठीक है ठीक है, उतार दो सुहास, हम तुम्हें कल ही जयपुर से इससे भी बढ़िया दूसरी अंगूठी मंगवा देंगे । दे दो इस मंगती को अपने हाथ की उतरन – तुम्हारे रोग – शोक सब इसके सर । सचमुच ही दिद्दा ने अंगूठी उतारकर मेरी ओर बढ़ा दी तो मैं खिसिया गई ।" 1

वातावरण और पात्र के अनुरूप उनके अन्य उदाहरण प्रस्तुत हैं ।

(1) "मयूरी, जाओ बेटा नहाकर आओ । आया.... आया..... कैसे भेज दिया बेबी को ?" हाथ में तौलिया लिए आया भागती – भागती आ गई। का करी मेम साहब, आंखी का काजर निकार लेत हैं ये बिटिया, हम पाउडर निकालन लगी, मुला चट से नंगी भाग आईन – चलो भीतर ।" उसके नंगे बदन को तौलिये में लपेटकर वह उसे चील सी उठा ले गई ।"2

1 – "भीलनी" – पृ. 63
2 – "वही" – पृ. 60

§2§ "ऐनी जल्दी करो बाबा बुलाता ।" एक पतली-
पतली टाँगोवाला लडका उसे पुकारने लगा ।
"ओ आता ।" अधैर्य और झुंझलाहट से ऐनी का
चेहरा लटक गया ।
"जल्दी करो ।" - लडका फिर चीखा ।
"ओ गोड, हम आता अब्बी ।"·······
"जा छोरी भीतर ।" चिड चिडा बूढा नेपाली
भाषा में बुद बुदा कर कुछ कहने लगा ।
"जान्छू ---- जान्छू बाबा ।" कहती ऐनी मेरे
कानों के पास फुसफुसाई - "बनर्जी शादी बनाया
मेम साब ? "¹ ।

निष्कर्षत: शिवानी के कथोपकथन वातावरण व पात्र के अनुकूल रोचक, चुस्त तथा कलात्मक हैं ।

भाषा शैली :- नवीन प्रयोग वैशिष्टय के कारण शिवानी की कहानियों की भाषा सूक्ष्म भावों की अभिव्यंजना प्रस्तुत करती है । इनकी कहानियों में प्रतीकात्मक शैली, संकेत शैली एवम् चित्रात्मक शैली का प्रयोग है । आधुनिक कहानी में आत्म चरित्रात्मक §जैसे शिवानी की "चील गाडी§, पत्रात्मक, डायरी आत्मक शैली प्रधान कहानियाँ लिखी गई है । आँचलिक शैली प्रधान नई कहानियों में ग्राम्य भाषा शब्दों मुहावरों आदि का प्रयोग हुआ है । शिवानी

1 - "अनाथ" - पृ॰ 112

पाणीश्वरनाथ रेणु, श्री शिवप्रसाद सिंह व भैरव प्रसाद गुप्त आदि की कहानियाँ इस शैली में उल्लेखनीय है । इस प्रकार शैली के द्वारा ही लेखक अधिक प्रभावोत्पादकता व रोचकता उत्पन्न कर सकता है । शिवानी के सभी कथानक एवम् चरित्र जीवन्त है क्योंकि शिवानीजी उनके साथ संसर्ग में थी । वे अपने नीजी हैं अत: इसमें सहजता, रोचकता तथा जीवन्तता ला सकी है । यथा शिवानी जी कहती है - "जब कभी कहानी लिखने बैठती हूँ, स्मृतियों के जल प्रपोत पर यत्न से धरी गरीयसी शिला कोई अदृश्य शक्ति उठाकर दूर पटक देती है, और वह तीव्र फुहार मेरे कागज-पत्र, मेरी लेखनी और स्वयं मुझे आपाद-मस्तक सराबोर कर छोड जाती है । मेरी अधिकांश कहानियों और उपन्यासों के पात्रों की सृष्टि इसी पावन धारा से अभिषिक्त हुई है ।" [1]

अत: शिवानी की भाषा में शब्द-चयन उत्कृष्ट है । उन्होंने यथा स्थान संस्कृत, अंग्रेजी, पहाडी, बंगला और हिन्दी के ठेठ शब्दों का भी प्रयोग किया है । भाषा की स्वाभाविकता बढाने के लिये कतिपय ठेठ शब्दों का प्रयोग किया है । जैसे, इजा, पाणिज्यू, कन्दरा, भकौस, अधन्ना बोज्यू, चुगद डोमनी, खंदक आदि । कई स्थान पर पूरे वाक्य भी बंगाली में दृष्टिगत होते हैं । जैसे - "एई जे, केमोन आछेन बऊदी ?... तथा "ताई होबे एखौन चलून देखी ।"[2]

1 - "मेरी प्रिय कहानियाँ" - पृ॰ 6

2 - "अनाथ" - पृ॰ 115

अँग्रेजी शब्द प्रयोग में भी शिवानी ने अपने अभिजात्य चरित्रों के माध्यम से यथेष्ट अँग्रेजी शब्द प्रयोग करवाया है । इस प्रकार उनका शब्द भण्डार व्यापक और समृद्ध है । उन्होंने अभिव्यंजना को प्रदर्शित व सशक्तता प्रदान करने वाले शब्दों का प्रयोग किया है । शिवानी की भाषा का आदर्श उनके पात्रों के सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर के आधार पर अवलम्बित है । अर्थात् उनकी भाषा पात्रानुकूल है । यथा - "पुष्पहार" की उन्मादिनी बुढ़िया का प्रलाप प्रस्तुत है । "अरे अभागो, क्या मुँह ताक रहे हो ?" बुढ़िया चीख चीखकर अदृश्य बिरादरी को न्यौत रही थी - "देखते नहीं, वह जा रहा है । अरे हरामियों, एक टूकड़ा सोना ले आओ भागकर, गंगा-जल और तुलसी दल... सुनते नहीं क्या ? हाय, तुम्हारी कोख जली बहू - बेटियाँ सूनी माँग और सूनी कलाइयाँ लेकर चिता चढ़ें । इस गाँव को महामारी चाटे । बज्जर गिरे ।" 1

शिवानी की शैली में प्रवाह पूर्णता है । शैली की नाट्यात्मकता, भावुकता - मार्मिकता एवं चित्रात्मकता पाठक को अपनी ओर जकड़कर रखती है । जिनके उदाहरण हम देखेंगे । नाट्यात्मका (नाटकीय शैली) :-"देख रहा है बेटा केवलानन्द ! महीना-भर हो गया, पर यह रहा

1 - "पुष्पहार" पृ० 5।

बौडम का बौडम ! अभी तक सप्तमी की दम लगाना भी नहीं सीख पाया ! पहला कश खींचते ही ससुरा खाँसते - खाँसते औंधिया जाता है । लौंडिया है रे क्या ? ही-ही-ही-ही"........

बाप रे बाप ! जैसी भयंकर हँसी थी, वैसा ही भयानक चेहरा भी ! नग्न-दिगम्बर, सारे बदन में राख का प्रलेप। ऊँची उठी उलझी जटाओं के उत्तुंग उभार को फिर गुरु ने बम! बम! कर खोल, लम्बी लटों की यवनिका को अपने नग्न स्कन्धों पर बिखेर दी । भजन के हाथ से चिलम छीन, वह फिर अपनी लाल अँगारे-सी आँखें ललाट पर चढ़ा जोर-जोर से कश खींचने लगा । "ले रे भजनानन्द, ऐसे कश खींच, समझा ?"[1]

भावुकता एवम् मार्मिकता : - "दस - बारह साल के, लम्बे गोरे लड़के ने चन्दे की मुड़ी - तुड़ी मैली नोट बुक मेरी ओर बढ़ा दी । नीली आँखों में करुणा - भरी याचना थी सूखे चेहरे को हँसी से सँवारकर वह फिर बोला - "माताजी चन्दा !"

मैं डाँट नहीं सकी । उसके हाथों की खँजड़ी के घुँघरु बीच-बीच में हवा से शायद स्वयं खनक उठे । वह आश्चर्य से मुझे देख रहा था । मैं जैसे गूँगी हो गई । सब्जी मँगाने के लिए पाँच का नोट थामे थी, वही चुपचाप उसकी ओर बढ़ा-कर

1 - "अपराजिता" - पृ. 54

मैं फिर उसे देखने लगी - ओह, वही था ! निश्चय वह वही था ! नोट पाकर वह अविश्वास से मुझे देखने लगा - पाँच का नोट तो क्या, एक का नोट भी उसे शायद आज तक कभी चन्दे में नहीं मिला था । दस गालियों के साथ मिलती थी कभी एक दुवन्नी या चवन्नी । आँखें तीरछी कर वह ठीक अपनी माँ की भाँति मुस्कराया । कितने सारे प्रश्नों की तरंगें मेरे कण्ठ के प्राचीर से टकरा-टकराकर टूट गईं ।"[1]

शिवानी ने शैली को अत्याधिक प्रभावोत्पादक बनाने के लिए उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों को भी प्रयुक्त किये हैं । उनके साहित्य में अधिकतर उपमा सतत् व्यापक है । शिवानी की उपमाएँ नवीन, मौलिक व विशेष है । उदाहरणार्थ :-

(1) "हम दोनों के धड़कते हृदय एक साथ संलग्न होकर, घड़ी के पेंडुलम की सी सधी धड़कन में धड़क रहे थे ।"[2]

(2) "छ: फुटी जर्मन मिसेज एरेसन अनभ्यस्त अँगुली से रूमाली रोटी का स्कर्ट का-सा घेरा फहरा ही रही थीं कि निरीह मुर्ग की आकाश की पसरी टाँगें पर दृष्टि पड़ते ही मेजबान लाल रंग को देख भड़क गए साँड-सा ही चौंका और नथुनों से क्रुद्ध झाग का धुँआ बिखेरता गुर्राता बाहर निकल गया ।"[3]

1 - "अनाथ" - पृ. - 124
2 - "भीलनी" पृ. 65
3 - "प्रतिशोध" - पृ. 97

§3§ "मदालसा सीट पर लेट गई, तो लगा एक लम्बे खजूर का कटा पेड़ ढह गया ।"[1]

§4§ इंजीनियर साहब सतर होकर बैठ गए जैसे उफनती वेगवती नदी की, धारा को आँखों ही आँखों में तौल रहे हों ।"[2]

§5§ "सहसा चारों ओर भयानक भूधरों घिरी मुक्तेश्वर की घाटी के काले विषधर ने करवट ली।"[3]

इसके अतिरिक्त शिवानी ने अपनी सशक्त शैली को निखारने के लिये कई मुहावरों एवम् कहावतों का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में किया है । इन्होंने प्राकृतिक उपादानों का प्रयोग करके भी अपने साहित्य को अधिक सुन्दर व सजीव बनाया है । जैसे -

"दूसरे दिन गुहा-वातायन की क्षीण कटि से पाँच दिन से रूठे सूर्य ने धरा पर गिरी बर्फ का प्रतिबिम्ब लेकर अपना दर्पण चमकाया और श्रीधर चौंककर जग गया । उसके कंधे पर माथा धरे, हीरावती ऐसी अन्तरंग धृष्टता से सो रही थी, जैसे वर्षों से उसी कंधे पर सोती चली आ रही हो ।"..........."पल भर को निकला सूर्य फिर किसी

1 - "सती" - पृ. 141

2 - "चलोगी चन्द्रिका" पृ. 81

3 - "अनाथ" - पृ. 118

मेघखण्ड में दुबक गया और तडा तड ओलों के चांटे मार मार कर प्रकृति ने एक बार फिर श्रीधर के विवेक को दूर भगा दिया ।"[1] एक और अन्य उदाहरण प्रस्तुत है ।

"गाडी ने सीटी दी और ठीक इसी समय, हमारे साथ की चौथी महिला ने डिब्बे में प्रवेश किया । गाडी मानों उन्हीं के लिए रुकी थी, डांट-डपट की फुफकारें छोडती गाडी चली और उसी के धक्के के साथ वे महिला, फट्ट से सीट पर लुढक पडीं ।"[2]

तथोकथित वर्णन के आधार पर हम निष्कर्षत: कह सकते हैं कि शिवानी की भाषा शैली वसन्त की बयार जैसी मधुर है । शिवानी की भाषा का भी अपना विशिष्ट व्यक्तित्व है । इस प्रकार की शैली उनकी अपनी-ही है जो बंगला, संस्कृत और कुमाऊंनी का समन्वय साधे मोर्डन अंग्रेजी को भी सम्मिलित करती हुई पाठक को प्रभावित करती है । उसमें माधुर्य, लालित्य और काव्यात्मकता है ।

1 - "करिए छिमा" - पृ॰ 32
2 - "सती" - पृ॰ 82